उठ जाग मुसाफिर भोर भई

(राग: भगवान तुम्हारे अंदर है) अथवा

(राग: दिल लूटनेवाले जादूगर, अब मैंने तुज़े पहचाना है)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है (२)

जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है

उठ नींद से अँखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा (२)

यह प्रीत करन

यह प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तु सोवत है (२)

जो कल करना है आज कर ले, जो आज करे वो अब कर ले (२)

जब चिडियाने

जब चिडियाने चुग खेत लिया, फिर पछताए क्या होवत है (२)

नादान भुगत अपनी करनी, ए पापी पाप में चैन कहाँ (२)

जब पाप की

जब पाप की गठरी शीश धरी, अब शीश पकड क्युँ रोवत है। (२)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है,

जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है...

2016-03-01 - http://youtu.be/tXmsiJx5ghU